Vol 4 Issue 8 Feb 2015 ISSN No :2231-5063

International Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

Welcome to GRT

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2231-5063**

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.aygrt.isrj.org

Golden Research Thoughts
ISSN 2231-5063
Impact Factor : 3.4052(UIF)
Volume-4 | Issue-8 | Feb-2015
Available online at www.aygrt.isrj.org

आचार्य कवि देव का ऋतू–वर्णन

मीनू रानी W/O श्री रणवीर सिंह मूण्ड

सारांश : सृष्टि के प्रारम्भ में जब मानव की आँख खुली तो उसने स्वयं को प्रकृति की गोद में पाया। इस गोद में पलते हुए मानव ने प्रकृति को अपनी सकल इच्छाओं की पूर्ति करने वाली अकारण अपार दयामयी माँ के रूप में देखा। दिनभर इधर–उधर भटकते समय यही उसे भोजन के लिए पफल–पूफल, कन्द–मूल प्रदान करती और यही उसको मधुर शीतल जल से तृप्त करने के उपरान्त अपनी क्रोड़ में समीरण की थपकियों से मधुर निद्रा का सुख प्रदान करती थी। सूर्य की प्रखर किरणों, उष्ण पवन, भयंकर जल एवं उपल वृष्टि, शीतल पवन एवं शरीर को जमा देने वाली हिम राशि से भी पीड़ित होकर मानव ने इसी प्रकृति की शरण ली होगी। अतः नानाविधि जीवन की दुर्गम आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाली इस प्रकृति के प्रति मानव की सहानुभूति पूर्ण निकटता होना स्वाभाविक था।

प्रस्तावना :

सुख–दुख में साथ देने वाली इस दैवी शक्ति से उसका ऐसा सम्बन्ध को भुलाए नहीं भूल। धीरे–धीरे मानव के प्रकृति के परिवर्तित रूपों की ओर ध्यान दिया होगा। आज जिस स्थान पर बैठकर वह अपनी इस मातृ–तुल्य सहचरी के साथ आनन्द का अनुभव कर रहा है, वह कल अपना रूप इतना विकृत और कठोर कर उसे कष्टदायक क्यों होने लगेगी? इसके सौंदर्य में जो निखार, लावण्य एवं माहाल आज है, वह कल कुरूपता,शुष्कता एवं नीरसता का रूप धरण क्यों कर लेगा, इस पर उसने गम्भीरता से विचार किया होगा। प्रकृति और ऋतुओं की पृथक् स्थिति का भान मानव को किसी ऐसे समय ही हुआ होगा।

ऋतुओं का केवल हमारे जीवन–जगत से ही नहीं काव्य से भी अटूट संबंध रहा है। ऋतु–वर्णन काव्य का वस्तुतः एक अभिन्न अंग है। काव्य में ऋतुओं से जोड़कर ही मानवीय भावनाएँ और संवेदनाएँ प्रस्तुत की गई है। हिंदी साहित्य में ऋतुओं को इतना महत्व दिया गया कि षट)तु के वर्णन की परंपरा भी बन गई। आदिकाल से भक्तिकाल तक न्यूनाधिक रूप में, साहित्य में ऋतु–वर्णन किया गया है। रीतिकाल में आकर ऋतु–वर्णन का सशक्त और नया रूप देखने को मिलता है। वस्तुतः हिंदी साहित्य में रीतिकालीन साहित्य शृंगार और वैभव का काव्य कहलाता है। रीतिकवियों द्वारा शृंगार की विभिन्न आवस्थाओं को प्रमाणित रूप से प्रस्तुत करने के लिए विभिन्न ऋतुओं को आधर बनाया गया है। यहाँ रीतिकाल के ऐसे ही उन कवियों में से जिन्होंने ऋतु–वर्णन को आधर बनाकर अपनी लेखनी चलाई है उनमें से आचार्य कवि देव के काव्य का मूल्यांकन किया जा रहा है।

ऋतुएँ जिस प्रकार प्रकृति का विशिष्ट अंग हैं,उसी प्रकार शृंगारिक कवि आचार्य देव के काव्य में भी वे विशिष्ट अंग के रूप में विद्यमान हैं। उनका नायिका भेद हो या शृंगार–वर्णन ऋतु–वर्णन के अभाव में शुष्क–नीरस और कृत्रिम जान पड़ता है। अतः दरबारी कवि होने पर भी आचार्य कवि देव ने प्रकृति की सहजता स्वाभाविकता की भांति अपने काव्य में ऋतुओं का भी यथास्थान, यथाप्रसंग वर्णन किया है। कहा जाता है कि दरबारी कवि दरबार की चारदीवारी से अपने आश्रयदाता की मानसिकता से ही बाहर निकल नहीं पाये, प्रकृति के साथ, समाज के साथ जुड़ने का न उनका मन था और उन्हें अवसर मिला। वस्तुतः ऐसा नहीं है क्योंकि कविता कल्पना की सहायता से भावों–संवेदनाओं को मूर्तित करती है। अतः इन रीति (आचार्य कवियों ने भी प्रकृति का उलेख किया है। देव कवि ने तो प्रकृति के विभिन्न उपादानों, विशेषकर ऋतुओं का तो विशिष्ट वर्णन किया है। देव के नायिका भेद का अधिकांशतः स्वस्थ भावगत एवं क्रियागत विवेचन–चित्राण)तुपफलक पर ही हुआ है। शुक्लाभिसारिका के लिए शरद और कृष्णाभिसारिका के लिए पावस और दिवा भिसारिका के लिए बसंत और पावस को मुग्ध के लिए शिशिर बसंत को मध्या के लिए ग्रीष्म, वर्षा एवं प्रौढ़ा के लिए शरद, हेमंत को पृष्ठभूमि के रूप में चुना गया है। वर्षा अधिक कामोद्दीपन का कार्य करती हैं कालिदास के समान ही देव को भी वर्षा का बादल इतना ही उद्दीपनकारी दिखाई देता है। उनकी राध बादलों की गर्जन, विद्युत की चमक, भयंकर जीवों, बिच्छू और सूर्प जैसे कीड़ों की उपेक्षा करती हुई, कृष्ण से मिलने अकेली केलि–कुंज में पहँच जाती है–

घटा घहराति बिज्जु छटा छहराति आधी
राति हहराति कोटि कीट रति रुंज लौं।

हूकत उलूक बन कूकत पिफरत पेफरु
भूकत जु भैरौं भूत गावैं अलि–गुज लौं।
झिल्ली मुख मूंदि तहाँ बीछीगन गूंदि विष
व्यालनि को रूंदि कै मृनालनि के पुंज लौं।
जाई वृषभान की कन्हाई के सनेह बस
आई उठि ऐसे मैं अकेली केलि कुंज लौं। [1]

रीतिकालीन कवियों ने वर्षा का खूब वर्णन किया है। वर्षा के आगमन का प्राकृतिक जगत के उपादानों पर क्या प्रभाव पड़ता है इस भाव की अवतारणा निम्न कवित्त में हुई है–

सोखे सिंधु सिंधुर से, बंधुर ज्यों बिंध्य गंध–
मादन के बंधु से गरज गुरवानि के।
झमकोर झूमत गगन घने घूमत,
प्रकारे मुख चूमत पपीहा मोखानि के।
नदी–नद सागर डगर मिलि गए देव,
डगर न सूझत नगर पुखानि के।
भारे जल–ध्रनि अंध्यारे धरनी–धरति,
धराधर धवत धुमारे धुरवानि के। [2]

मार्गों का जलमग्न होना, नदी–नालों का मिलकर एक हो जाना, बादलों का सागर से पानी भरना, जल की अधिकता से मेघों का पृथ्वी के निकट आना तथा विविध वर्णों के बादलों का वर्णन रीतिकालीन कवियों के प्रतिपाद्य रहे हैं।

जिस प्रकार शृंगार रस के संदर्भ में ऋतु–वर्णन करते समय रीतिकालीन कवियों ने शरद, हेमन्त और शिशिर ऋतुओं की ओर अधिक ध्यान नहीं दिया है, उसी प्रकार इन ऋतु के आलम्बन–परक वर्णन भी बहुत कम है। बहुत खोजने पर ही कुछ उदाहरण मिलते हैं। नागरीदास के 'शरद उत्सव' तथा 'गोपी बैन विलास' नामक ग्रंथों में इस प्रकार के कुछ उदाहरण देखे जा सकते हैं। महाकवि देव ने सारस, हंस, तुषार, काँस, स्वच्छ प्रकाश आदि परम्परागत उपादनों से शरद–ऋतु के बड़े मनोरम चित्रा अंकित किए हैं। शरद् की चाँदनी का वर्णन इस कवित्त में द्रष्टव्य है–

''आस पास पूरण प्रकाश के पराग सूझै,
बनन अगार डीठि गली ह्वै निबरते।
पारावार पारद अपार दशै दिशि बूड़ी,
विंधु ब्रह्मांड उतरात विधि वरते।
शारद जुन्हाई जन्हु पूरण स्वरूप धई,
धई सुध सिंधु नभ शुभ्र गिरि वरते।
उमड़ो परतु ज्योति मण्डल अखण्ड सुध,
मंडल मही में इन्दु मडल विवरते।। [3]

इसी प्रकार का एक और छंद देखिए जिसमें वर्षा–ऋतु का बहुत सजीव चित्राण हुआ है -

सुनिकैं धुनि चातक मोरन की चहुँ ओरन कोकिल कूकनि सों।
अनुराग–भरे हरि बागन में सखि रागनि राग अचूकनि सों।
कवि 'देव' घटा उनई जुनई वन भूमि भई दल दूकनि सों।
रंगराती हरी हहराती लता झुकि जाती समीर के झूकनि सों।। [4]

यह प्रकृति–चित्राण–संबंधि छन्द है जिसमें वर्षा–ऋतु का बहुत सजीव चित्राण हुआ है। सतही दृष्टि से तो यह आलम्बन रूप में किया गया प्रकृति–चित्राण जान पड़ता है किन्तु छन्द का द्वितीय चरण बता रहा है कि दूती द्वारा कथित इन उक्तियों में प्रकृति का उद्दीपन रूप में चित्राण किया गया है। बादलों के क्षण–क्षण में परिवर्तित रूप का कवि ने सूक्ष्म निरीक्षण किया है। बादलों के आकार तथा वर्णों का चित्राण, उनका इधर उधर दौड़ना तथा तज्जन्य प्रसन्नता का इससे सुन्दर वर्णन अन्यत्रा मिलना कठिन है। कवि ने ऋतुओं को अपनी आँखों से देखा है, अतः जब जिस स्वरूप का वर्णन वह करना चाहता है, उसका ऐसा वर्णन करता है, जो अपने में अनुपमेय है। वर्षा में बादलों की गर्जन तथा रुई के पर्वत जैसे उसके आकार को देखकर कवि का मन आह्लादित हो उठता है।

सोखें सिन्धु सिंधुर से, बंधुर ज्यौं बिंधय गंध
मादन के बन्धु से गरज गुरवानि के।
झमकारे झूमत गगन घने घूमत,
पुकारे मुख चूमत पपीहा मोखानि के।
नदी नद सागर डगर मिलि गए 'देव'
डगर न झूमत नगर पुखानि के।
भारे जल–धरनि अँध्यारे धरनी–धरनी
ध्राध्र धवत धुमारे धुरवानि के।। [5]

वर्षा–ऋतु के इस वर्णन में मेघों के घुमड़ने, गरजने, घूमने और झूमने, पृथ्वी के जलपूर्ण होने, मार्गों के असूझ या अदृश्य होने, नगरी के सौन्दर्य को झकोरने आदि का दृश्य उपस्थित किया गया है।

वसन्त ऋतु में विरहिणी की दशा का वर्णन किया गया है। रजत–ज्योत्सना, चंदन, त्रिविध समीर आदि विरहिणी के शरीर को दुगना जला रहे है। प्रकृति का उद्दीपन रूप में चित्राण किया गया है। संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि शृंगार की पृष्ठभूमि पर चलने वाले शृंगारिक कवि देव ने नायक–नायिकाओं की अटखेलियों के लिए शृंगार की विभिन्न क्रियाओं के उपयुक्त वातावरण के लिए जिन ऋतुओं को आधर बनाया है या सहज ही वे ऋतुएं कवि के काव्य का अंग बन गई हैं उनमं वसंत और वर्षा का सर्वाध्कि वर्णन हुआ है अन्य ऋतुओं का न्यूनाध्कि यदि उसने कभी गाँवों की ओर देखा भी है तो शृंगारिक सामग्री तो वहाँ से ली है, किंतु उनके कष्टों को अभिव्यक्ति नहीं दी।

---

1. भाव विलास – 2/55
2. विद्यानिवास मिश्र ;संपा.द्ध, देव सुध, छन्द सं. 68
3. सुखसागर तरंग, छन्द 171
4. रस विलास, छन्द 2/73
5. सुखसागर तरंग, छंद 78

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.aygrt.isrj.org